सेमेस्टर-6 कोर-14

4. पत्रकारिता का उद्भव और विकास

डॉ० सफ़ीउल्लाह अंसारी

पत्रकारिता के क्षेत्र में बंगभूमि का कोलकाता महानगर बहुत ही उर्वर रहा है। हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत कलकत्ता से हुई और भारतीय पत्रकारिता की जन्मभूमि बंगाल ही है। कलकत्ता में ही पत्रकारिता के जन्म के साथ-साथ उसका विकास हुआ। इसका कारण यह है कि 1755 ई० में कलकत्ता में छपाई शुरु हुई तथा 29-01-1780 में भारत के पहले समाचारपत्र 'बंगाल गजट' की शुरुआत हुई। 'बंगाल गजट' निकालने का श्रेय जेम्स अगस्तस हिकी को प्राप्त है। 'बंगाल गजट' को कहीं-कहीं 'कलकत्ता गजट' तथा 'कलकत्ता गजट एडवर्टाइजर' भी कहा जाता है। नवम्बर 1780 में 'इंडिया गजट' के नाम से दूसरा पत्र शुरु किया।

1796 में गुजराती टाइप तैयार किया गया तथा 1802 में मराठी में छपाई शुरु हुई। प्रेस की स्थापना 1812 में हुई और गुजराती का पहला समाचारपत्र 'मुम्बई समाचार' प्रकाशित हुआ। 1818 ई० में बांग्ला भाषा का मासिक 'दिग्दर्शन' प्रकाशित हुआ। 1820 ई० में राजाराम मोहन राय, ताराचंद दत्त और भवानीचरण बैनर्जी ने 'संवाद कौमुदी' प्रकाशित की।

हिन्दी का पहला पत्र 'उदंत मार्तण्ड' 30 मई 1826 ई० में प्रकाशित हुआ। इस पत्र की स्थापना पंडित युगल किशोर शुक्ल ने की थी। युगल किशोर शुक्ल कानपुर के निवासी थे, किन्तु यह पत्र उन्होंने कलकत्ता से निकाला। 'उदंत मार्तण्ड' एक वर्ष सात महीने तक चला। प्रति मंगलवार को प्रकाशित होने वाला यह साप्ताहिक पत्र आर्थिक विषमताओं के कारण अधिक नहीं चल सका और 04 दिसम्बर, 1827 ई० को हमेशा के लिए बंद हो गया। हिन्दी पत्रों में दूसरा पत्र था 'बंगदूत' इस पत्र के संपादक थे नीलरतन हालदार।

Scanned with CamScanner

यह प्रत्येक रविवार को प्रकाशित होता था तथा इसका मासिक मूल्य एक रुपया था।

कलकत्ता बहुत समय तक हिन्दी पत्रकारिता का केन्द्र बना रहा। 1857 ई० के आस-पास वहाँ से कई पत्र शुरू हुए, जिनमें 'बंगदूत', 'प्रजामित्र', 'सामन्तदंत मार्तण्ड' तथा 'समाचार सुधावर्षण' उल्लेखनीय है। 'भारतमित्र' (1878), 'सारसुधानिधि' (1879), 'उचितवक्ता' (1880), 'हिन्दी बंगवासी' (1890) आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1923 ई० में 'मतवाला' का प्रकाशन हुआ, जिससे निराला जुड़े थे। 1928 ई० में 'विशाल भारत' का प्रारंभ हुआ।

पत्रकारिता का दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र बनारस था। बनारस में सबसे पहला हिन्दी पत्र 1845 ई० में प्रकाशित हुआ। इसके संपादक गोविन्द पन्त थे, इस पत्र का नाम 'बनारस अखबार' था। 11 जून, 1846 ई० को 'मार्तण्ड' नाम का एक साप्ताहिक पत्र कलकत्ता से सुप्रकाशित हुआ। इसके संपादक नसीरुद्दीन थे। यह पाँच भाषाओं में प्रकाशित होता था। 'बनारस सुधाकर' नाम से दूसरा पत्र 1850 ई० में प्रकाशित हुआ। इसके संपादक एवं प्रकाशक तारामोहन मैत्र थे। तीन वर्ष के लिए यह पत्र बांग्ला और हिन्दी दोनों भाषाओं में निकला और 1853 ई० से यह केवल हिन्दी में छपने लगा।

हिन्दी का प्रथम दैनिक समाचारपत्र 'समाचार सुधावर्षण' 1854 ई० में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। यह हिन्दी तथा बांग्ला दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित होता था। इसके संपादक श्यामसुंदर थे। यह पत्र करीब 14 वर्षों तक प्रकाशित हुआ।

Scanned with CamScanner

1868 ई० में 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन हुआ। यह मूलतः कविता की पत्रिका थी, किन्तु इसमें समाज-सुधार, राजनीति और साहित्य का समावेश भी रहता था। इसके संपादक भारतेन्दु हरिश्चंद्र थे। काशी से प्रकाशित 'कविवचन सुधा' 1875 ई० में साप्ताहिक रूप में छपने लगा। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 15 अक्टूबर, 1873 ई० में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' निकाली। बाद में इसका नाम बदलकर 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' कर दिया। इसके बाद 1873 ई० में ही 'हरिश्चंद्र पत्रिका' और 1874 ई० में स्त्रियों के लिए 'बालबोधिनी' नाम की पत्रिका शुरू की। हिन्दी भाषा की यह महिलाओं की पहली पत्रिका थी। मासिक पत्रों में भारतेन्दु मंडल के प्रमुख सदस्य बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' निकालकर हिन्दी की महान सेवा की। 1905 ई० में सरकार ने इसपर रोक लगा दी।

17 मई, 1878 ई० को कलकत्ता से प्रकाशित होने वाला समाचारपत्र 'भारत मित्र' पाक्षिक रूप में निकला। बाद में यह दैनिक हो गया। 1900 ई० में दो प्रमुख पत्र सामने आये। इनमें माधवप्रसाद मिश्र का 'सुदर्शन' का प्रकाशन हुआ और इसी समय 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन के साथ हिन्दी पत्रकारिता में एक नये युग का प्रारम्भ हुआ।

बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशक में 'सम्मेलन पत्रिका' (1913), 'हिन्दुस्तानी' (1931), 'रूपाभ' (1931) जैसी साहित्यिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होनी शुरू हुई। पराड़कर का 'आज' जैसे दैनिक का भी 1920 ई० में प्रकाशन हुआ। अन्य पत्र-पत्रिकाओं में 'अभ्युदय'

'देवदूत', 'मर्यादा', 'माधुरी' ने हिंदी साहित्य की सेवा की। माधुरी (1921), 'चाँद' (1922), 'सुधा' (1927) ने उल्लेखनीय कार्य किया। 'चाँद' का फाँसी अंक उल्लेखनीय है। इसी प्रकार प्रेमचंद का 'हंस' साहित्यिक और सामाजिक-सांस्कृतिक जागृति का अग्रदूत बनकर प्रसिद्ध रहा।

मुख्य रूप से कलकत्ता, प्रयाग, काशी, कानपुर हिंदी पत्रकारिता के केन्द्र में रहे, किन्तु मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार आदि भी इससे अछूते नहीं रहे। माखनलाल चतुर्वेदी ने 'प्रभा' (खंडवा 1913), बनारसीदास चतुर्वेदी ने 'मधुकर' निकालकर साहित्यिक वातावरण का प्रसार किया। दिल्ली से 'अर्जुन' (1923), 'महारथी' (1925), 'नवयुग' (1933), 'हिन्दुस्तान' (1936) आदि कई प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। 1913 ई० में कानपुर से 'प्रताप' का प्रकाशन गणेशशंकर विद्यार्थी ने किया। इसके पश्चात कई दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रयमासिक तथा अनियतकालीन पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। जैसे - 'दैनिक जागरण', 'दैनिक भास्कर', 'नवभारत टाइम्स', 'जनसत्ता', 'प्रभात खबर' 'दैनिक हिन्दुस्तान', 'आलोचना', 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'सारिका', 'कहानियाँ', 'आजकल' 'पाखी', 'परिकथा' इत्यादि। इनमें कुछ बंद हो गयीं, कुछ आज भी प्रकाशन में हैं।

30 मई 1826 ई० से हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत से आजतक 194 वर्षों में बहुत बदलाव आये हैं। पत्रकारिता सिर्फ समाचार लेखन तक ही सीमित नहीं रही। आज नवीन तकनीक तथा विज्ञान में विकास तथा लगातार प्रगति ने पत्रकारिता को व्यवसाय बना दिया है। अधिकतर अखबार और टी.वी. चैनल्स पूंजीपतियों के हाथ में है। आम जन तक पूरी सच्चाई नहीं पहुँच पा रही है।

—X—

डॉ० सर्फाउल्लाह अंसारी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज
जमशेदपुर, झारखण्ड-831001

Scanned with CamScanner